दादा तुझे मिलनेका

दादा तुझे मिलनेका, सत्संग ही बहाना है ... (२)
दुनियावाले क्या जाने, अपना रिश्ता पुराना है ... (२)

बाहर में ढुंढा तुझे, अंदरमें पाया है ...हो ... हो ... (२)
मेरे मन मंदिरमें, मेरे दादाका ठीकाना है
दादा तुझे मिलनेका, सत्संग ही बहाना है...

गीतोंमें ढुंढा तुझे, भावोंमें पाया है ... हो ... हो ... (२)
भावोंकी शुध्धिमें, मेरे वीरका ठीकाना है
दादा तुझे मिलनेका, सत्संग ही बहाना है ...

कायामें ढुंढा तुझे, स्वरूपमें पाया है ... हो ...हो ... (२)
रत्नत्रयी साधनामें, मेरे पार्श्वका ठीकाना है
दादा तुझे मिलनेका, सत्संग ही बहाना है...

अहम् में ढुंढा तुझे, शरणमें पाया है ... हो ...हो ... (२)
सदगुरूके चरणोमें, मेरे प्रभुका ठीकाना है
दादा तुझे मिलनेका, सत्संग ही बहाना है...

विभावमें ढुंढा तुझे, स्वभावमें पाया है ... हो ... हो ... (२)
सदगुरूकी आज्ञामें, मेरी राहका ठीकाना है
दादा तुझे मिलनेका, सत्संग ही बहाना है...